अमरीका में हिंदी: एक सिंहावलोकन

--सुषम बेदी, कोलंबिया यूनिवर्सटी

जब से अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने (जनवरी २००६) यह घोषणा की है कि अरबी, हिदी, उर्दू जेसी भाषाओं के लिये अमरीकी शिक्षा में विशेष बल दिया जायेगा और इन भाषाओं के लिये अलग से धन भी आरक्षित किया गया तो यह समाचार सारे संसार में आग की तरह फैल गया था। यहां तक कि फरवरी २००७ को भी डिस्कवर लैंग्वेजेस महीना(१) घोषित किया गया । अमरीकी कौंसिल आन द टीचिंग आफ फारन लैग्वेजेस नामक भाषा शिक्षण से जुड़ी संस्था ने विशेष रूप से राष्ट्रपति बुश के संदेस को प्रसारित करते हुए बताया कि देश भर में कई तरह से स्कूलों और कालेजों के प्राध्यापक भाषाओं के वैविध्य को मना रहे हैं। (२)

सच तो यह है कि दुनिया को चाहे अब जाके पता चला हो कि इन भाषाओं को पढ़ाया जायेगा, इस दिशा में काम तो बहुत पहले से ही हो रहा था।

भारत के साथ अमरीका के सांस्कृतिक, राजनैतिक और व्यापारिक सम्बन्ध पिछले दस सालों में अचानक कई गुना और कई स्तरों पर बढ़ गये हैं सो भारतीय भाषाओं मे रुचि भी उसी हिसाब से कहीं ज्यादा बढ़ रही है लेकिन जिन वजहों से बुश ने भाषाएं सीखने की घोषणा की थी , उसकी मुखय वजह एक ही थी और वह थी अमरीकी सुरक्षा

नीति। आम तौर पर अपने अमरीकी होने में गर्व रखने वाला औसत अमरीकी नागरिक यह सोचता है कि दुनिया का अंतिम और उच्चतम पड़ाव अमरीका ही है जहां कि वह पहले से पहुंचा हुआ है सो ना तो उसे कहीं जाने की जरूरत है न ही किसी दूसरी भाषा या संस्कृति को सीखने की। बहुत देर तक इस देश में यही नीति अपनायी गयी कि यह देश एक मेल्टिंग पॉट है जहां आकर सारी संस्कृतियों के रंग एक ही मुखयधारा में घुल जाते हैं। यही इस देशवालों का काम्य रहा। इसी से यहां एक ही भाषा, एक सा पहनावा , एक सा खानपान बना रहा। अमरीकी संस्कृति का मूल स्त्रोत यूरोपीय संस्कृति और रहन सहन है। चूंकि यहां पहले आप्रवासी इंग्लैंड से आये थे और उसके बाद भी देर तक यूरोप के विभिन्न हिस्सों से आवासन होता रहा सो अंग्रेजी संस्कृति का ही प्राधान्य रहा जिसमें फ्रेंच, इतालवी , जर्मन और पूर्वी यूरोपीय तत्व घुलते गये। हिटलर के अनाचारों से बचने के लिये यूरोप से यहूदियों की भी बाढ़ आयी और वे भी अमरीकीपन में काफी हद तक घुल गये।

लेकिन यूरोपीय संस्कृति से बहुत अलग नस्लों का भी आवासन इस देश में हुआ जो उस तरह से कभी घुल नहीं पाये जैसे कि गोरी जातियां घुल पायीं।

अफ्रकी नस्लों के लोग तो बहुत पहले से ही दासों के रूप में यहां लाये गये जिन्हें यहीं की संस्कृति में ढाला गया पर अपने शरीर के रंग की वजह से वे अपनी अलग हस्ती बनाये रहे। इसी तरह से चीन, जापान वियतनाम, कोरिया और फिलीपीन आदि बहुत से ऐशियाई देशों से

आनेवाले आवासी भी अपनी भाषा, रंग और नस्ल की वजह से इस मेल्टिंग पाट से अलग थलग पड़ गये।
भारतीयों का आवासन यूं तो देश की आजादी से बहुत पहले हो गया था और कनाडा तथा केलिफोर्निया में आने वाले पंजाबी इसमें प्रमुख थे। लेकिन बड़े पैमाने पर अमरीका में छठे दशक में इंजिनियरों , डाक्टरों , नरसों इत्यादि की खपत बढ़ी और फिर टैक्नालाजी की क्रांति ने तो भारी संखया में भारतीयों को यहां आने का अवसर दिया । भारतीय भी अपनी संस्कृति और भाषाएं अपने साथ लेकर आये। यह सच है कि अंग्रेजी आने की वजह से वे इस मेल्टिंग पॉट में जल्दी घुल गये पर उनका रंग, नस्ल, रहन रहन का तौर तरीका, उनकी विशिष्ट संस्कृति उन्हे पूरी तरह से नयी संस्कृति में घुलने से बचाये रहे। घर से बाहर चाहे वे जो भी बोलें पर घर की चहारदीवारी में उनकी अपनी भाषाएं पनपती रहीं। भारतीयों के आपसी मिलनेजुलने वाले दूसरे भारतीयों के बीच भी। चूंकि हमारे परिवार काफी हद तक संश्लिष्ट बने रहते हैं इसलिये नानी दादी से बात करने के लिये नयी पीढ़ी के बच्चे भी इन भारतीय भाषाओं के बोलते बोलते ही बड़े होते हैं। हां कई परिवार ज्यादा अमरीकीकृत होते हैं, उतना ही हिंदी या दूसरी भारतीय भाषाओं का प्रयोग वहां कम मात्रा में होता है।

हिन्दी का अध्यापन

दरअसल अमरीका की भाषाओं में रुचि दूसरे महायुद्ध के बाद से ही शुरु हो गयी थी। महायुद्ध के समय ही अमरीका को यह अहसास हुआ

कि एक दुनिया बाहर भी है जिसे जानना उनकी अपनी सुरक्षा के लिये जरूरी है। १९४७ में यूनिवर्सटी आफ पेन्सिलवेनिया में दक्षिण ऐशयाई विभाग खोला गया जिसके अंतर्गत हिन्दी भी शामिल थी। भारत में जब हम हिन्दी भाषा का इतिहास पढ़ते हैं तो विदेशी विद्वानों के काम को नजरअंदाज़ नहीं किया जा सकता। यह भि नहीं भूल सकते कि शुरु में इसाई मिशनरियों ने हिन्दी को अपनाने और उसमें अनुवाद आदि का काम किया था। यूनिवर्सटी आफ पेन्सिलवेनिया के दक्षिण ऐशियाई विभाग की स्थापना करनेवाले नारमन ब्राउन भी मिशनरी पृष्ठभूमि के थे।

छठे दशक में हिन्दी का अध्यापन इस देश की लगभग नौ प्रमुख यूनिवर्सटियों में शुरु हो चुका था । जिनमें शिकागो, मैडिसन, पेन, कोलंबिया, बर्कले इत्यादि शामिल हैं। इन यूनिवर्सटियों के नाम पते प्रोफेसर प्रिचेट ने इल्म नाम से अपनी वेबसाईट पर लगाये हुएहैं। इस वेबसाईट का पता है(३)

पढ़नेवालों की संखया चाहे बहुत कम थी पर यूनिवसरटियों में तथा डिफेंस इस्टीटयूट जेसी जगह पर हिन्दी की शुरुआत हो गयी थी। आठवें दशक में अमरीका की प्रमुख दस यूनिवर्सटियों में दक्षिण ऐशयाइ भाषाओं और अन्य विषयों के अध्ययन के विभाग थे। नवें दशक में अचानक यह संखया ओर बढ़ी । इसकी कुछ बहुत दिलचस्प वजहें थी। एक तो यह कि छठे-सातवें दशक में आनेवाले भारतीयों के बच्चे अब कालेजों में पढ़ने लगे थे । ज्यादातर अमरीकी

कालेजों में विदेशी भाषा एक अनिवार्य विषय बन गया है और भारतीय मूल के छात्रों की मांग थी कि वे विदेशी भाषा के रूप में (जो उनके कोर्स में अनिवार्य विषय है) हिन्दी को लें। नवें दशक में बहुत से कालेजों और यूनिवसरटियों में हिन्दी अध्यापन के कार्य शुरु हुए। दूसरे अमरीकियों के साथ भारतीय मूल के विद्यार्थियों से यह कक्षायें खास तौर पर भर रही थीं।
कई कालेज - यूनिवर्सटियों में तो विद्यार्थियों कि मांग की वजह से ही हिन्दी की पढ़ाई शुरु की गयी। न्यूयार्क यूनिवर्सटी में नवें दशक में हिन्दी की स्थापना के लिये मैं खुद जिम्मेदार रही हूं। इस समय १०० से उपर कालेजों, विश्वविद्यलयों, भाषा संस्थाओं में हिंदी पढ़ाई जा रही है।

पर सच्चाई यह है कि भाषा सीखने की शुरुआत जब कालेज में आकर करते हैं तो बहुत देर तक सीखने का समय नहीं रहता। भाषा की विषय के रूप में अनिवार्यता एक या दो साल की होती है जिसमें विद्यार्थी बहुत प्राथमिक स्तर पर ही रहते हैं। उनका शब्दज्ञान भी बहुत सीमित ही रहता है। सिर्फ इक्के दुक्के छात्र ही दो साल से ज्यादा भाषा सीखते हैं। खास तौर से वही जो कि इस दिशा में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते हों। इसीलिये साहित्य पढ़नेवाले छात्र गिने चुने ही होते हैं। दूसरे विषयों को हिन्दी माध्यम से पढ़ना तो दूर की बात रही। हिन्दी पर जो भी शोध का काम होता है वह भी अंग्रेजी में ही। जब तक हिन्दी स्कूलों में शुरु नहीं हो जाती बहुत कम विद्यार्थी ही भाषा का उच्च स्तर का ज्ञान पा सकते हैं। हाल मे चूनिवर्सटी आफ

टेक्सास, आस्टिन में पहली बार चार साल का हिंदी का कार्यक्रम शुरु किया गया। इससे कुछ स्नातक निकले हैं जिन्होंने साहित्य का पठन भी किया लेकिन जब तक ऐसे कार्यक्रम दूसरे विश्वविद्यालयों में भी शुरु नहीं होते, यह छोटे स्तर पर ही बना रहेगा।

९/११ के हादसे ने निश्चय ही दक्षिण ऐशियाई और मध्यपूर्व की भाषाओं की ओर सबका ध्यान खींचा क्योंकि अचानक अमरीकियों को लगा कि भाषा न जानने की वजह से वे इस सारे जाल से बाहर रह गये।हादसे के बाद प्राप्त रिकार्डिंग जब सुनी गयीं तो उनकी भाषाएं थी उर्दू, अरबी, पश्तो इत्यादि।
तभी यह महसूस किया गया कि दूसरी संस्कृतियों से अपरिचय अमरीका के लिये महंगा पड़ा है और राजनीतिज्ञों का ध्यान तब भाषा अध्यापन की ओर गया।
बुश की इस घोषणा के बाद से आज तक अमरीका में हिन्दी के शिक्षण में बहुत अंतर आया है। यह उसी गति से बढ़ रहा है जैसे नवें दशक में था। जिन भाषाओं को इससे खास फर्क पड़ा है वे अरबी, पश्तो इत्याादि हैं जिनका रिश्ता इस्लामी दुनिया से है। पर उर्दू भी इस्लामी दुनिया से जुड़ी भाषा मानी जाती है सो उसके मिस से हिन्दी को भी कुछ तो लाभ हुआ है।आखिर हिन्दी उर्दू एक ही भाषा के तो दो रूप हैं!
इधर हिंदी का जो नया परिदृश्य बना है वह है अमरीकी सरकार द्वारा स्टारटाक परोगरामों की शुरुआत जिसके तहत गरमी की छुट्टियों में स्कूलों के लिये हिंदी शिक्षा के कार्यक्रम किये जाते है और ये देश के

अलग अलग हिस्सों में किये जाते हैं ताकि उन क्षेत्रों के स्कूलों के छात्र इनमें हिस्सा ले कर हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति से वाकिफ हो सकें। यह कार्यक्रम काफी लोकप्रिय हो रहे है और खास तौर से भारतीय इनमें अपने बच्चों को भेजने के इच्छुक रहते हैं। स्टारटाक के तहत हिंदी पढाने के लिये अध्यापकों को भी प्रशिक्षण दिया जाता है। पिछले कुछ सालों में ही हिंदी के काफी संखया में अध्यापक तैयार हुए है जो अपने अपने क्षेत्रों में हिंदी सिखाने का काम कर रहे हैं।

अब हिन्दी का अध्यापन न केवल बहुत से कालेजों में शुरु हो गया है बल्कि कई संडे स्कूल भी खुल गये हैं जहां हिन्दी जाननेवाली भारतीय महिलायें ही मूलतः पढ़ाती हैं। आजकल इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि इस तरह से हिन्दी सीखे हुए छात्रों को परीक्षा के द्वारा भी किसी तरह की मान्यता दी जाये। एकाध राज्य के स्कूलों में ऐसा हुआ भी है पर अभी इस दिशा में काफी कोशिशों की जरूरत है क्योंकि अभी इस अध्यापन का कोई नियमित पाठयक्रम निर्धारित नहीं है, न शिक्षक ही शिक्षण कला में प्रशिक्षित हैं। पहले पाठयक्रम को एक सही आकार देने की जरूरत है। अनगढ़ से अध्यापन में विद्यार्थी कुछ सीख जाते हैं कुछ नहीं। कितना सीखे हैं, कितना नहीं, इसकी कोई विधिवत परीक्षण या मूल्यांकन की भी पद्धति अभी पूरी तरह से विकसित नहीं है। पर इस दिशा में काम जरूर हो रहा है।

यूनिवर्सटियों के पाठयक्रम इन संडे स्कूलों पर लागू हो नहीं सकते क्योंकि यूनिवर्सटी के छात्र वयस्क हैं और संडे स्कूलों में स्कूली उम्र के

बच्चे या किशोर। अमरीकी स्कूलों में हिन्दी नियमित स्कूली पाठयक्रम में शामिल है ही नहीं।

शिक्षण सामग्री

अमरीका से कहीं पहले ब्रिटेन में हिन्दी पढ़ाने की पुस्तकें तैयार हो चुकी थी। उन्हीं का इस्तेमाल यहां भी किया जाने लगा लेकिन यह महसूस किया गया कि वे यहां के सीखने वालों के लिये सही नहीं और यहा के हिन्दी प्राध्यापकों ने अपनी सामग्री तैयार करनी शुरु की। फेयरबैंक्स और मिश्रा की हिन्दी शिक्षण की पुस्तक इसी दिशा में उठाये गये शरुआत के कदम हैं। नार्मन जीद की प्रेमचंद रीडर या वेद वटुक और टेड रिकार्डी की समाज विज्ञान विषयों की पाठय पुस्तिका इसी दिशा के कदम हैं। आठवें दशक तक काफी पुस्तकें आ चुकी थीं। इनको अमरीकी पाठक की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर लिखा गया था। अमरीकी यूनिवर्सटी के कैम्पस की सच्चाइ और उस हिसाब से भाषा को कांटा छांटा गया था। उन दिनों जो पुस्तकें विशेष रूप से सामने आयीं - वे थीं - - हर्मन वैन आलफन की फर्स्ट इयर और सेकंड इयर हिन्दी, उषा जैन की हिदी ग्रामर, यमुना कचरु और राजेश्वरी पंढरीपांडे की इंटरमीडियेट हिन्दी, उषा नील्सन की अडवांस हिन्दी, शीलावर्मा की इंटरमीडियेट हिन्दी तथा पीटर हुक की इंटरमीडियेट हिन्दी इत्यादि।

इन सभी किताबों में बोलचाल की सरल हिन्दी को अपनाया गया था, साथ ही अमरीकी छात्र की ज़रूरतों के अनुरूप अंग्रेजी में अनुवाद और व्याकरण की टिप्पणियां थीं। इनमे से कुछ पाठच पुस्तकों के साथ

मौखिक आडियो टेप्स भी उपलबध थे जैसे कि उषा जैन और वैन आल्फन। उषा जैन ने अपनी पाठयपुस्तक में व्याकरण को बहुत सरल बनाकर पेश किया है पर इससे व्याकरण की नींव तो अचछी पड़ती है लेकिन बोलचाल की स्वाभाविकता नहीं आती। व्याकरणिक अभ्यास अच्छे हैं। इनकी इटरमीडियेट हिंदी में पाठ दिलचस्प हैं।लोककथाओं से लेके आधुनिक कहानियों को भी शामिल किया है। साथ में शब्दार्थ भी हैं।

हर्मन वैन आल्फन ने अपनी पुस्तक में हिन्दी गानों का भी भाषा सीखने के उदेशय से खूब इस्तेमाल किया। कई तरह की दिलचस्प तस्वीरों, नारों तथा विज्ञापनों को पुस्तक में शामिल करके इन्होंने आम बोलचाल की हिन्दी का भरपूर इस्तेमाल अपनी पाठयपुस्तकों में किया। साथ मे टेप्स भी हैं। पुस्तकें दिलचस्प हैं। भाषा सीखने के साथ साथ सांस्कृतिक वातावरण भी देने की कोशिश है।

फ्रैंक साउथवर्थ और विजय तथा सुरेन्द्र गंभीर ने एक नया कदम इस दिशा में उठाया और नयी दिशायें, नये लोग शीर्षक से वीडियो टेप्स तैयार किये जिनके साथ पुस्तक भी उपलबध करायी। इन टेप्स को भारत की जमीन पर भारतीय ऐक्टरों के साथ मिलकर बनाया गया। इन वीडियो टेप्स की भाषा को आरंभिक विद्यार्थियों को ध्यान में रख आसान बनाया गया है।वे बोलते भी धीरे हैं कि नये सीखनेवाले की समझ में आ जाय। "नयी दिशायें नये लोग" नाम से यह वीडियो सामग्री तैयार की गयी है। ये टेप बच्चों को शिक्षा देने के लिये इस्तेमाल किये जा सकते हैं। इनमें दो युवा भाई-बहन हैं सुनीता और अशोक जो भारत यात्रा पर जाते हैं , वहां अपनी मौसी के यहां जाते

हैं, दिल्ली की सैर करते हैं, और फिर हर नये पाठ के साथ उन्हें नयी-नयी जगह ले जाया जाता है और भाषा के भी तरह-तरह के इस्तेमालों से छात्र अवगत होते हैं।टेप के साथ ट्रांसक्रिप्ट्स भी हैं। लोकप्रिय गाने भी सिखाये गये हैं। चूंकि दोनों भारतीय बच्चे भारत के अनुभव कर रहे हैं इसलिये भारतीय बच्चों को हिंदी सिखाने के लिये इनका अच्छा इस्तेमाल हो सकता है। भाषा और स्थितियों में कभी-कभी बनावट की गंध जरूर आने लगती है। कुछ असहजता भी। चूंकि भाषा सिखाने के उद्देश्य से बने वीडियो हैं इसलिये सभी पात्र बहुत साफ-साफ बोलते हैं जो वास्तविक जीवन में नहीं होता पर फिर भी भाषा सीखने के मकसद से वे अच्छे ही हैं।
इनकी अब सीडी भी आ गयी हैं और इनकी वेबसाइट भी तैयार हो गयी है।

आठवें दशक के अंत में अमरीकी कौंसिल आन द टीचिंग आफ फॉरन लैंग्वेजेस का प्रभाव हिन्दी की ओर भी आया जिसके असर में एक ओर भाषा के मौखिक पक्ष पर विशेष जोर दिया गया और दूसरे पढ़ने ओर सुनने समझने के लिये भी प्रमाणिक सामग्री तैयार की गयी। यह सामग्री पहले की पाठय सामग्री से बहुत अलग थी। पहले की पाठय सामग्री तैयार करने के लिये पाठ निर्मित किये जाते थे जिससे उनकी भाषा कई बार बहुत बनावटी हो जाती थी पर यह सामग्री भारतीय फिल्मों और अखबारों, टीवी कार्यक्रमों इत्यादि से उठायी गयी और इसके पढ़ाने का तरीका भी एकदम अलग था जिसे कि संकलन में

समझाया भी गया। जैसे कि यह अपेक्षा कि पाठक हर शब्द को समझने की कोशिश न करें वर्ना उनको निराशा हो सकती है और वे अपनी रुचि खो सकते हैं। यह कहा गया कि पाठक हर प्रमाणिक टुकड़े के साथ संलग्न सवालों के जवाब देते हुए मूल को समझें पर हर शबद को समझने की कोशिश न करें ताकि जो अपेक्षित है वही ओझल न हो जाये।

दरअसल यह पाठन की विधि यह मान कर चलती है कि जीवन में जो तरीके हम पढ़ना-सुनना समझने के लिये अपनाते हैं, उन्हीं को दूसरी भाषा सीखने पर भी आरोपित किया जाये जैसे कि यहां हर पाठ के लिये पूर्वपाठ, पाठ व उत्तरपाठ की विधि चुनी गयी। पूर्वपाठ में छात्र जो पहले से जानता है, उसी को उकसाया जाता है, शीर्षक के जरिये से उसके पूर्वज्ञान या अनुमान को आधार बनाया जाता है, बहुत से शब्द जो उसकी सुप्त स्मृति में होते हैं वे चेतन में आ जाते हैं। फिर उसे पूरा टेक्स्ट पढ़ने को कहा जाता है । चेतन में आये वे शब्द और कुछ अनुमान उसे नया टेक्सट समझने में मदद देते हैं। और फिर उत्तरपाठ में वह पढ़े को समझता हुआ उसे आगे की सिखलाहट के साथ जोड़ लेता है। पढ़ने या सुनने के इलावा अभ्यासों में टेक्स् से जुड़ी लिखने , बात करने की गतिविधियां भी शामिल रहती हैं।

चूं अगर भाषा के स्वाभाविक रूप को सीखना हो तो और ये प्रामाणिक वीडियो टेप व टेक्स्ट "अमरीकी कौंसिल आन द टीचिंग आफ फारन लैग्वेजेज़" के दफ्तर से प्राप्य हैं। श्रवण द्वारा भाषा सीखने के लिये ये "आथैंटिक मैटीरियल्ज़ फार टीचिंग लिसनिंग कामपरेहैन्शन इन हिंदी" हैं और पठन सीखने के लिये "आथैंटिक

मैटीरियल्ज़ फार टीचिंग रीडिंग कामपरेहैन्शन इन हिंदी "हैं ।इसे तैयार करने में पांच हिंदी प्राध्यापकों लोगों की कमेटी थी - सुषम बेदी,विजय गंभीर, सुरेन्द्र गंभीर, मणीन्द्रवर्मा और हर्मन वैन आल्फन। इस सामग्री में हिंदी फिल्मों और दूरदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के दो-चार मिनटों के टुकड़े/क्लिप्स हैं जिनके साथ भाषा की समझ को सिखाने के लिये सवालों की पुस्तिका है। ऐसी ही प्रामाणिक शिक्षण की हिंदी भाषा सामग्री रीडिंग काम्प्रेहेनशन के लिये भी हमारी कमेटी ने तैयार की। इस सामग्री में नये कोण से भाषा सिखाने का प्रयास है और वह यह कि जिस तरह भाषा भाषा के मौलिक बोलने वाले सीखते हैं उन्ही तरीकों से छात्रों को सिखाया जाये बजाय कि ड्रिल वगैरह के बनावटी तरीके तैयार किये जायें। साथ ही भाषा सीखते हुए छात्र पढ़ने और सुनने की बेहतर समझ बनाने की स्ट्रैट्जीज़ भी सीखते हैं। आखिरकार अपने जीवन में जूझना तो उनको प्रामाणिक भाषा रूपों से ही है।तो शुरु से उन्हीं को क्यों न सिखाया जाये ।यही मूल सिद्धांत है इस पद्धति के पीछे। क्रैषन इस पद्धति के हिमायती हैं कि दूसरी भाषा सीखने में अपनी पहली भाषा सीखने के नियमों को ही लागू करने से सिखलाहट बेहतर और सफल होती है।(४)

लेकिन कुछ विद्यार्थी पढ़ने के परंपरागत तरीकों से ज्यादा अच्छा सीखते हैं। इसलिये मैं एक से ज्यादा पढ़ाने की विधियों के इस्तेमाल के पक्ष में हूं।हां उनमें एक संतुलन और दृष्टि रखनी बहुत जरूरी है। कोशिश यही होनी चाहिये कि उन तरीकों से छात्रों पर बोझ के बजाय भाषा के रिइनफोर्समेंट का ध्येय अपनाया जाये। यानि कि

उदाहरण के लिये अगर विद्यार्थी भोजन के बारे में पाठ्यपुस्तक में पढ़ रहे हैं तो वीडियो का क्लिप किसी रेस्तरां में बैठे खाना आर्डर करने की बातचीत के बारे में हो! रीडिंग काम्प्रेहेन्शन मेन्यू या सब्ज़ी तथा अन्य ऐसे भोजय पदार्थों के बारे में हो तो अपने आप रीइनफोर्समेंट होती रहेगी।

व्याकरण और ड्रिल वगैरह के इस्तेमाल के पक्ष मे जो लोग हों उनके लिये बर्कले में उषा जैन ने प्राथमिक हिंदी शिक्षण की व्याकरण के ज्ञान के साथ पुस्तक तैयार की है जिसके साथ आडियो टेप भी हैं। व्याकरण की समझ के साथ सीखनेवालों के लिये लंदन यूनिवर्सटी के रयूपर्ट स्नेल और वेटमैन की किताब "टीच योअरसेल्फ हिंदी" पुस्तक आरंभिक शिक्षण के लिये बहुत दुरुस्त है। इनमें बातचीत व्याकरण की कठिनाइ को ध्यान में रखकर आसान से दुरुहतर की ओर क्रमशः आयोजित की गइ है। मैं कई वर्षों से स्नैल जी की ही किताब का इस्तेमाल कर रही हूं और ऐकेडेमिक झुकाव वाले विद्यार्थियों के लिये यह पुस्तक बहुत काम की है।

करीन शोमर के साथ मिल कर उषा जैन ने इंटरमीडियेट स्तर की पुस्तक तैयार की है जिसमें , व्रतकथायें, लोककथायें, महाभारत और रामायण की कहानियों के साथ-साथ हिंदी के प्रमुख साहित्यकारों की भी कहानियां हैं। इसी तरह की इंटरीडयेट/ माध्यमिक स्तर की किताब यमुना कचरु और राजेश्वरी पंडरिपांडे की है । आर. सी. जोसन की जातक कथायें और पंचतंत्र कथायें बच्चों के लिये बहुत

उपयोगी होंगी। जिन बच्चों को पहले से हिंदी आती हो उनके लिये ये पुस्तकें उपयोगी होंगी। कहानियां सरल संस्कृतमयी भाषा में लिखी गयी हैं। दोनों किताबों का प्रिंट खूब मोटा-मोटा है और हर कथा के साथ में गलासरी है।

यूनिवर्सटी आफ टैक्सास आस्टिन के प्रोफेसर हर्मन वैन आल्फन ने प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की बहुत सुंदर पाठय पुस्तकें तैयार की हैं जो कई यूनिवर्सटियों में हिंदी पढ़ाने के कार्यक्रम में सफलता पूर्वक इस्तेमाल की जा रही हैं। इन्हें बच्चों के लिये भी इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि इनकी भाषा बोलचाल की है और तस्वीरें रुचिकर हैं। साथ में आडियो टेप्स भी हैं जिनमें लोकप्रिय हिंदी गाने भी शामिल हैं। शीला वर्मा ने मैडिसन, विस्काउन्सन में प्राथमिक और माध्यमिक और उच्चतर स्तर पर टेक्स्ट बुक्स तैयार की हुई हैं। जो भाषा के साथ-साथ व्याकरण में भी रुचि रखते हों उनके लिये प्रोफेसर पीटर ब्रुक्स (ईस्ट लैंसिंग,मिशिगन) की इंटरमीडियेट और एडवांस लेवल की किताब बहुत अच्छी रहेगी। सुरेन्द्र गंभीर ने भी उच्च स्तर की बोलचाल की हिंदी की पुस्तक तैयार की है।

हमारे कुछ भारतीय विद्यार्थियों ने घर में सुन-सुन कर हिंदी सीखी होती हैं ।वे बोल लेते हैं पर पढ़ना लिखना नहीं आता। बहुत बार ये छात्र लिपि भर ही सीखने में रुचि रखते हैं। यह स्थिति बाहर रहनेवाले भारतीय बच्चों की खास तौर से होती है।दूसरी विदेशी भाषाओं की भी अमरीका में यही स्थिति है।

इसलिये ऐसी सामग्री भी है जो देवनागरी लिपि से परिचित कराती है- हाल ही मे रयूपर्ट स्नैल की एक पुस्तिका निकली है सिर्फ लिपि सिखाने के लिये। रयूपर्ट स्नेल अमरीकी नहीं हैं, अंग्रेज हैं, लेकिन इनकी पुस्तकों का इस्तेमाल अमरीका में खूब होता है। बहुत साल तक लंदन में हिंदी पढ़ाने के बाद अब वे यूनिवर्सटी आफ टेक्सास, आस्टिन में हर्मन वेन आळफन के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।हर्मन वैन आलफन ने भी लिपि सिखाने के लिये आरंभिक हिंदी की पुस्तक कुछ साल पहले निकाली थी जो बच्चों के लिये बहुत उपयोगी हो सकती है क्योंकि उसमें हिंदुस्तान की दुकानों, इश्तहारों इत्यादि की दिलचस्प तस्वीरें हैं। साथ ही लिखने का अभ्यास कराने के खाली स्थान भी हैं। गंभीर दंपत्ति ने लिपि सिखाने का एक वीडियो टेप भी तैयार किया है जो पैन यूनिवर्सटी से उपलब्ध किया जा सकता है। लिपि सिखाने के लिये अब वेब पर भी उनका पृष्ठ देखा जा सकता है। सिराक्यूज़ यूनिवर्सटी की वेबसाइट पर भी लिपि सिखाने का प्रयोजन है।

इधर कम्पयूटर पर हिंदी शिक्षण की तेजी से शुरुआत हो गयी है। आज की पीढ़ी कम्पयूटर से शैशवकाल से ही परिचित है इसलिये कम्पयूटर हिंदी सीखने-सिखाने का बड़ा जोरदार माध्यम बन गये हैं। इंटरनेट पर पढ़ाने की अब बहुत सी सामग्री उपलब्ध है। तथा बहुत सी नयी सामग्री तैयार की जा रही है।जिस तेजी से अमरीका में पुराना काम पुराना पड़ता जाता है तो अब टेप्स वगैरह का इस्तेमाल कोइ नहीं करता। कई यूनिवरसिटियों में इंटरनेट पर पाठय सामग्री लगायी जा रही है।टैक्सास, आस्टिन में आज कल रयूपर्ट स्नैल, जिष्णु शंकर आदि

के द्वारा इस दिशा मे बहुत काम हो रहा है। न्यूयार्क यूनिवर्सटी की प्रोफेसर गेबरियेला इलेवा स्टारटाक के प्राध्यापकों के लिये खास तौर से प्रामाणिक सामग्री फेसबुक पर लगाती रहती है तथा उनके पढ़ाने में इस्तेमाल के तरीके भी बताती हैं। उनका सारा जोर प्रोजेक्ट बेस्ड लरनिंग पर है। किसी एक विषय को चुनकर न केवल उससे जुड़ी भाषा ही सिखायी जाती है साथ ही उस विषय का भी अच्छा ज्ञान कराया जाता है। सभी तरह के दृश्य और श्रव्य उपकरणों (फिल्म, डाक्यूमेंटरी, विडियो, टेक्सट आदि) का इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह छात्र भाषा और संस्कृति दोनों का ही ज्ञान साथ साथ पाते हैं। जरूरी है कि इंटरनेट के लिये सही और बढ़िया शिक्षण सामग्री इजाद की जाये। भावी दिशा यही है। यूपेन, आस्टिन, टेक्सस, येल तथा कई दूसरी यूनिवर्सटियों में ये काम हो रहा हे। जिम बेकर ने हिन्दी की सारी शिक्षण सम्बंधी वेबसाईटस को एक ही जगह इकट्ठा कर दिया है जो बहुत लाभदायक वेबपृष्ठ है। इसका नाम रखा है सुपर हिन्दी वेबसाईट्स और पता है (५)

कई यूनिवर्सटियो के अपने वेबपेज हैं। न्यूयार्क यूनिवर्सटी की प्रोफसर गैबरियेला इलेवा ने भी तस्वीरों के साथ कहानियों के जरिये से हिंदी सिखाने का वेब पृष्ठ बनाया है। यहां प्रारंभिक और इंटरमीडियेट तथा ऐडवांस लेवेल की कहाानियां हैं जिनको पढ़ा व सुना जा सकता है ।साथ ही शब्दार्थ सुची भी उपलब्ध है। भारतीय लोककथायें इत्यादि इस शिक्षण को सांस्कृतिक दृष्टि से सघन बनाती हैं। इस वेबसाईट का नाम है वर्चुअल ह्न्दी।

अफरोज ताज ने अ डोर टु हिन्दी नाम से शिक्षण की वेबसाइट तैयार की है नार्थ कैरोलाईना विश्वविद्यालय की ओर से। शुरु के पाठ जो पुरे हो चुके हैं, वे उपयोगी हैं। अलग अलग शहरों मे जाकर वहां के प्रामाणिक दृश्य दर्शाते हुए भाषा सिखाने की कोशिश है।एक तरह से कई शहरों की सैर करते हुए छात्र हिन्दी सीखता है। भारत के इलावा इसमें पाकिस्तान के शहरों का दर्शन भी शामिल है।
इसके इलावा कार्ला (यूनिवर्सटी आफ मिनीसोटा की वेबसाईट) के माध्यम से भी सामग्री उपलब्ध की जा सकती है । वैब पृष्ठों की एक सूची यहां नत्थी है। ये कई स्तर के हैं और विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप शिक्षक इनका प्रयोग करते हैं। (६) यूं अब तो अगर अंर्तजाल पर जायें तो नर्सरी राईम्स से लेकर महाभारत और रामायण तक की कथाओं के कितने ही तरह के हिंदी रुपांतर मिल जाते हैं, साहित्य के वैविध्य को जानने के लिये हिंदी समय पर साहित्य सामग्री या हिंदी की अंर्तजाल पत्रिकाये पढ़ने को मिल जाती हैं। बात चुनाव की हो गयी है वर्ना बहुत कुछ उपलब्ध है ।जिसे शिक्षक छात्रों के रुचि के अनुरूप तैयार कर सकते हैं।

अंत में भाषा शिक्षण के लिये एक बहुत सहायक काम करते हैं शब्दकोष और व्याकरण की पुस्तकें। चूंकि यहां ज्यादातर पढ़ने-पढ़ानेवाले अंगरेजी बोलनेवाले हैं इसलिये आर. ऐस. मैकग्रैगर का हिंदी व्याकरण या माइकेल शपीरो का हिंदी व्याकरण हिंदी के व्याकरण को समझने-समझाने में बहुत मदद करेंगे। इसी तरह मैकर्गगर, बाहरी या चर्तुवेदी का हिंदी-अंग्रेजी या कामिल बुल्के और

सुरेश अवस्थी का अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोष विदयार्थियों के लिये मददगार हैं। यह अच्छा रहेगा कि उनको इन शब्दकोषों का ज्ञान दिया जाये वर्ना विद्यार्थी घटिया सा शब्दकोष उठा लेते हैं जिनमें उनको न तो सही अर्थ मिलते हैं न ही पूरे शब्द। इंटरनेट पर भी शब्दकोष तैयार हो गया है। यूं तो लोगबाग गूगल अनुवाद पर भी निर्भर करने लगे हैं जो हमेशा सही नहीं होता।
इस सारी सामग्री की सूचनायें "इल्म" सूची में शामिल हैं जिसे आप इंटरनेट पर देखा जा सकता हैं। (फ्रैंसिस प्रिचेट की वेबसाईट पर, देखिये ३)

पाठयक्रम की एकरूपता का सवाल

अमरीका में भाषा शिक्षण के स्तरों में एकरूपता लाने का काम कर रही है एक अमरीकी संस्था अमेरिकन कौंसिल आन द टीचिंग आफ फारन लैंग्वेजेस। इसी अमरीकी कौंसिल ने हिंदी की मौखिक परीक्षा के भी प्रतिमान बनाये हुए हैं जो देश भर में मान्य हैं और चार लोग इस परीक्षा को प्रशासित करने के लिये कौंसिल द्वारा सर्टीफाईड हैं(विजय गंभीर, सुषम बेदी, उषा जैन और नसीम हाईन्स)। पैन यूनि. से लिखित परीक्षाओं की भी सामग्री मिल सकती है। सुषम बेदी तथा विजयगंभीर अमरीकन कौंसिल आन द टीचिंग आफ फारन लैंग्वेजेस की ओर से मौखिक परीक्षण कला सिखाने के लिये प्रशिक्षक के रूप में

भी सर्टीफाईड हैं। समय समय पर ये दोनों अमरीका मे हिन्दी पढ़ानेवालों के लिये प्रशिक्षण कार्यशालाएं देती रहती हैं।
इसके इलावा दक्षिण ऐशयाई भाषाओं के शिक्षकों की भी ऐक संस्था बनी है--साल्टा याकि साउथ ऐशियन लैग्वेज टीचर असोसिएशन। जो दूसरी अमरीकी भाषा संस्थाओं के साथ मिलकर काम करती है । आजकल ज्ञानम महाजन इसकी अध्यक्ष है। इनका भाषा शिक्षण संबंधी सूचनाओं का एक न्यूजलैटर भी निकलता है। इन्होंने वाशिंगटन के नेशनल फारन लैंग्वेज सेंटर के साथ मिल कर हिंदी पढ़ाने की सामग्री का व्यौरा लैंगनैट नाम के वेब पर दिया हुआ है। इसके इलावा कार्ला ने भी हिंदी शिक्षकों की एक इंटरनेट सूची बनायी हुई है।(६)
कुछ साल यह संस्था सोयी सी रही। अब गेबिरयेला इलेवा, जिष्नु शंकर, सीमा खुराना तथा गौतमीशाह, ज्ञानम महाजन इत्यादि नयी पीढ़ी के शिक्षकों के नेतृतव मे फिर से इसे जीवन्त बनाया जा रहा है। लेकिन पाठयक्रम की एकरूपता अमरीकी यूनिवर्सटियों में नहीं है। यहां का प्रजातांत्रिक ढंग हर संस्था को अपने मानदंड खुद गढ़ने देता है। पर सबसे उपर जो एक तरीका इन मानदंडों की एकरूपता का दर्शन कराता है वह है परीक्षण प्रणाली। अमरीकी इंस्टीटचुट आफ इंडियन स्टडीज़ ने कुछ परीक्षण पत्र तैयार किये हुए है पर उनका इस्तेमाल वे अपने लिये ही करते हैं। इस तरह सारे विश्वविद्यालये अपने स्वतंत्र परीक्षा पत्र तैयार करते हैं।

हिन्दी में भी ऐसे इम्तहान तैयार किये जा रहे हैं जो किसी भी जगह पढ़े हुए छात्र के स्तर को बता सकते हैं। अमरीकी कौंसिल के द्वारा ही दिये गये ये मानदंड हैं जिनके आधार पर विभिन्न स्तर निधार्रित किये जाते हैं। मौखिक परीक्षा के मानदंड तो काफी सालों से मौजूद हैं।अभी रीडिंग तथा राईटंग काम्प्रेहेन्शन की परीक्षा का भी टेस्ट तैयार हुआ है।ये इम्तहान कम्पयूटर पर दिये जाते हैं।

भारतीय और अभारतीय मूल के छात्र तथा शिक्षण प्रणाली की चुनौतियां:

हिन्दी शिक्षण को लेकर आज जो बहुत महत्वपूर्ण सवाल उठाया जा रहा है वह है भारतीय मूल के छात्र। जब से भारतीय मूल के छात्र बड़ी मात्रा में हिन्दी की कक्षाओं में पहुंच रहे हैं, शिक्षण की विधि आमूलचूल परिवर्तन की मांग कर रही है जबकि ऐसे साधन अभी उपलबध नहीं कि इनके लिये अलग से सामग्री तैयार की जाये। अभी तो क्विकफिक्स जैसा ही चल रहा है और पहले से मौजूद शिक्षण सामग्री को ही थोड़े कल्पनात्मक ढंग से इस्तेमाल किया जा रहा है ।यूं कुछ लोग इस के लिये विशिष्ट सामग्री की तैयारी का भी प्रयास कर रहे हैं।

हेरिटेज छात्रों को नजर में रखकर थोड़ी बहुत नयी सामग्री तैयार की जा रही है वह मूलतः इंटरनेट पर है। इंटरनेट पर शिक्षण की विधि लीनियर के बजाय सर्कुलर है इसलिये हर मूल के विद्यार्थी अपनी योग्यता के अनुरूप कुछ न कुछ पा सकते हैं।भविष्य में यही अधिक

लोकप्रिय और उपादेय होगी। और अमरीकी शिक्षा का वातावरण भी इंटरनेट को गले लगाता दीखता है। जैसा कि पहले भी कह चुकी हूं अफरोज ताज , गेब्रियेला इलेवा, राकेश रंजन, जिष्णु शंकर, तेज भाटिया,गौतमी शाह, सीमाखुराना (फिलमी गानों की योजना)गंभीर दम्पति , पटिर हुक (मल्हार वेबसाईट) हर्मन वैन आलफन इत्यादि कंपयूटर पर ही वर्तमान और भावी सामग्री तैयार कर रहे हैं।। मैंने स्वयं भी हिन्दी महिला कथाकारों की वेबसाईट तैयार की है जो हिंदी उर्दू फ्लैगशिप(आस्टिन, टैक्सास) वेबसाइट पर लगी है। सुरेन्द्र गंभीर ने हाल ही में एक बहुत महत्वपूर्ण कंपयूटर पर पाठयक्रम तैयार किया है बिजनेस हिंदी। इसका इस्तेमाल व्हार्टन बिजनेस स्कूल, फिलाडेलफिया में हो रहा है। बिजनेस हिंदी, या समाज विज्ञान और विज्ञान की हिंदी, ये सारी नयी दिशाये हैं जिनकी ओर हिंदी पाठयक्रम को अग्रसर किया जा रहा है।

हिन्दी पाठयक्रम का मानकी करण

इस समय भारतीय बच्चे इतनी बड़ी तादाद में हिंदी की मांग कर रहे हैं कि सारे अमरीका में जगह जगह मंदिरों, घरों इत्यादि में बहुत से उत्साही माता- पिता उहें हिन्दी सिखलाने का यत्न कर रहे हैं। बात यह है कि जहां यूनिवर्सटिटयों में हिन्दी पढ़ाने का इंतजाम है, वहां अमरीका के स्कूलों में हिन्दी शिक्षण का कोई स्थान नहीं है। कोशिश यह है कि ये बच्चे अगर स्कूलों में ही हिन्दी सीख जाये तो यूनिर्वसटी जाकर वे साहित्य शिक्षा पा सकते हैं जबकि अभी सबको कखग से ही

शुरु करना पड़ता है। दूसरा यह भी है कि कालेज जाने का इंतजार करने से पहले ये बच्चे हिन्दी घर से ही जान लें ताकि कालेज मे दूसरे विषयों पर ध्यान लगायें। खैर दोनों बातें सही हैं।
इस दिशा में जो पहला कदम उठाया गया वह था शिक्षा के मानकी करण का (सुषम बेदी ओर विजय गंभीर इस योजना की सहअध्यक्षा हैं) इसके लिये पुरे देश से दस सदस्य चुने गये। यूनिवर्सटी तथा संडे स्कूल में कार्यरत शिक्षकों ने मिलजुल कर यह काम किया।
काम मानक निर्धारण का था ताकि एक बार ये मानक बन जायें तो संडे स्कूलो या आगे चल कर मान्यताप्राप्त अमरीकी स्कूलों में जो मानक अपनाये जाये उनका आधार पहल से मौजूद हो। कालेजों में भी यही मानक इस्तेमाल किये जाने का विचार है। यह काम भी अमरीकी कौंसिल की मदद से हुआ। अमरीकी कौंसिल यह काम बहुत सी भाषाओं - अरबी, फ्रेंच, चीनी, जापानी, जर्मन इत्यादि के लिये पहले से ही कर चुकी है और हमारे इस काम का भी मूलाधार यही नींव है जिस पर हिन्दी के मानक ठहराये जायेंगे। अभी इसी साल यह काम समाप्त हुआ जो अमरकिी कौंसिल अअफ फारन लैग्वेजेस द्वारा उपलब्ध किया जा सकता है।

हिन्दी भाषा और साहित्य सम्बन्धी अध्ययन और अनुसंधान

हिन्दी विषयों पर अनुसंधान

जैसा कि मैं पहले कह चुकी हूं दक्षिण ऐशयाई विभाग की शुरुआत यूनिवर्सटी आफ पैन्सिलवेनिया, फिलादेलफिया मे १९४७ में हुई। जिसके अंतर्गत हिन्दी भी पढ़ायी जाने लगी। संस्कृत का अध्ययन तो पहले से चला आ रहा था पर हिन्दी की शुरुआत भारत की स्वाधीनता के बाद हुई।

जहां तक शोध का सवाल है, यूरोप के भाषा वैज्ञानिक पहले से ही भाषा के शोध में लगे हुए थे । यहां भी भाषावैज्ञानिकों ने इस ओर ध्यान दिया।

ज्यादातर यूनिवर्सटियों में छठे दशक मे ही हिन्दी का शिक्षण शुरु हुआ था। शुरु मे विद्यार्थी अमरीकी स्नातकोत्तर छात्र होते थे। लेकिन हिन्दी पर विशेष शोध नहीं हुआ। हां अनुवाद कार्य काफी हुआ। जिन प्रमुख नौ विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ायी जाने लगी थी वहां दो तरह के कार्य हुए- - हिन्दी शिक्षण की सामग्री तैयार करना तथा अनुवाद कार्य।

इधर १९६१ में अमरीकन इंस्टीटयूट आफ इंडियन स्टडीज़ की स्थापना हुई जिसके माध्यम से यूनिवर्सटी में शोध के इच्छुक छात्रों के लिये अनुदान की व्यवसथा थी। इससे बहुत तरह के शोध को बढ़ावा मिला। इस संस्था ने लगभग ६००० छात्रों को शोध के लिये सहायता दी है। इनमें से कुछ हिन्दी का काम करनेवाले भी हैं। इस संस्था के द्वारा भारत में ही भारतीय भाषाओं को सिखाने का भी विधान है। पहले यह काम दिल्ली बनारस में होता रहा, अब राजस्थान में हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था है। इस संस्था का दफ्तर डिफेंस कालोनी दिल्ली मे है और अब गुड़गांव मे बड़ा दफ्तर खुल गया है।

सातवें - आठवें दशक में कुछ अनुवाद कार्य प्रकाशित हुए जैसे कि डेविड रयूबिन का प्रेमचंद की कहानियों का अनुवाद, गौरडन रौडारमल का नयी कहानियों का अनुवाद। यूं तो रोडारमल की डाक्टरेट के शोध परबन्ध का विषय भी नयी कहानी था पर वह शोध अभी तक अप्रकाशित है। डेविड रयूबिन मृत्युपर्यन्त अनुवाद का भरपुर काम करते रहे । प्रेमचंद के बाद उनका निराला की कविताओं का अनूदित संग्रह कोलंबिया यूनिवर्सटी प्रेस से प्रकाशित हुआ. इन्होने चारो छायावादी प्रमुख कवियों का अनुवाद किया जो कि अब आक्सफोर्ड प्रेस , दिल्ली से रिटर्न आफ सरस्वती नाम से प्रकाशित हुआ है। नवें दशक में उनका प्रेम चंद की कहानियों का दूसरा संग्रह प्रकाशित हुआ आक्सफोर्ड परेस से ही। इससे पहले निर्मला उपन्यास का अनुवाद भी छपा। डेविड रयूबिन ने मेरे भी दो हिन्दी उपन्यासों , हवन तथा लौटना का अंग्रेजी अनुवाद किया है। हवन द फायर सेक्रिफाईस नाम से हाइन्मन, इगलैंड से छपा तथा लौटना पर्टिट आफ मीरा नाम से बुक्स इंटरनेशनल ने छापा।

जहां तक अनुवाद का सवाल है मेरा मत यह है कि डेविड रयूबिन के अनुवाद बहुत साफ सुथरे और उनमें भाषा में बहुत रवानगी ओर पठनीयता है। वे चूंकि स्वयं एक उपन्यासकार है उनके गद्य की भाषा बहुत बारीकी और काव्यात्मकता लिये है। जहां जहां हिन्दी का गद्य काव्यात्मक बना है, रयूबिन ने उसे अंग्रेजी अनुवाद में बहुत कुशलता से पकड़ा है। यही कारण है कि छायावादी कवियों के अनुवाद का कार्य उन्होंने अपने उपर लिया और उसे बखूबी निभाया। उनकी पुस्तक सरस्वती की वापसी में चारो छायावादी कवियों की कविताओं का

अनुवाद है। उन्होंने निराला की राम की शक्ति पूजा और प्रसाद की प्रलय की छाया जैसी दुरूह कविताओं का बहुत सुन्दर अनुवाद किया है। आक्सफोर्ड से डेविड की सभी अनूदित रचनायें हाल में प्रकाशित हुई हैं। ये रचनायें यहां के यूनिवर्सटी प्रेसों से भी छप चुकी है खास तौर से प्रेमचन्द, निराला तथा सरस्वती की वापसी। आदित्य बहल ने कृष्णा सोबती, फ्रासेस प्रिचिट ने प्रेमचंद, बाब हक्सटेड ने मुद्राराक्षस की कृतियों का तथा जेसन ग्रुनबाम ने उदयप्रकाश की कहानियों तथा पीली छतरी वाली लड़की का अच्छा अनुवाद किया है। कुछ और लोग भी अनुवाद कार्य मे लगे हैं। फ्रांसेस प्रिचिट का मुखय कार्य गालिब का अनुवाद है।

महादेवी वंर्मा पर करीन शोमर ने भी बर्कले यूनिवर्सटी से अपना शोध ग्रंथ लिखा। मुझे लगा कि जो कुछ महादेवी के बारे में हम सब भारत से जानते हैं। उसी को अंगरेजी मे रख दिया गया है। कोई बहुत मौलिक नजरिया या शोध मुझे नहीं दीखा।

कैथी हैन्सन का मुखय काम थियेटर पर है। उनकी नौटंकी ड्रामा पर लिखी किताब भी शोध का बहुत महत्वपूर्ण काम है। इसके इलावा इन्होंने फनीश्वरनाथ रेणु की कहानियों का अनुवाद किया है। शायद यहां यह कहना भी सही होगा कि आधुनिक हिन्दी साहित्य के इलावा प्राचीन हिन्दी साहित्य पर भी अमरीकी विद्वानों ने काम किया है। विशेष रूप से भक्ति साहित्य पर। इस दिशा में जॉन स्ट्रैटन हाली का सूर पर, लिंडा हैस का कबीर पर काम उल्लेखनीय है।

ऐलिसन बुश रीति साहित्य में केशवदास पर काम कर रही हैं। कुछ और विद्वान भी में इस दिशा में काम कर रहे हैं।

हिन्दी - उर्दू का सवाल

अमरीका की ज्यादातर यूनिवर्सटियों में हिन्दी उर्दू एक भाषा के रूप में ही पढ़ाये जाते हैं। उनके अलग अलग विभाग नहीं हैं।
मेरी अपनी कोलंबिया यूनिवर्सटी को ही ले लीजिये। यहां पहले वर्ष में विद्यार्थी केवल देवनागरी लिपि में हिन्दी - उर्दू सीखते हैं। दूसरे साल में हम उनको उर्दू की लिपि भी सिखला देते हैं। उसके बाद हिन्दी साहित्य का कोर्स अलग होता है और उर्दू साहित्य का अलग। अब तो पहले साल मे ही उर्दू भी पढ़ायी जाने लगी है। कभी कभी इनको मिला कर भी कोर्स दिया जाता है। खास तौर से प्रगतिवादी लेखकों को मिलाना आसान हो जाता है चूंकि उनकी भाषा हिन्दुस्तानी थी, न हिंदी न उर्दू। प्रेमचंद, मंटो, यशपाल, इस्मत चुगताई, कृष्न चंदर इत्यादि को दोनों लिपियों में पढ़ाना संभव है। अंग्रेज़ विद्वान शैकल की एक ऐसी पाठय पुस्तक भी है जिसमें दोनों लिपियों का इस्तेमाल है और यह पुस्तक अमरीका मे भी प्रिय है। इनकी शुरुआत इंशा अल्ला खां की रानी केतकी की कहानी से है जिसने सचमुच ऐसी भाषा देनी चाही जिसमें हिंदी को छोड़ और किसी भाषा का पुट न हो। न फारसी, न संस्कृत।

यूं अब कई यूनिवर्सटियों मे अलग अलग भाषा के रूप मे भी इन्हें पढ़ाया जाता है जैसे कि यूपेन, मेडिसन और न्यूयार्क यूनिवर्सटी मे ।

अंत में ---

उम्मीद करती हूं कि ज्यों ज्यों शिक्षण का प्रसार बढ़ेगा, त्यों त्यौं अनुवादों का काम भी तथा आलोचना का भी बढ़ेगा। यह सही है कि चाहे भारतीय मूल के विद्यार्थियों की तादाद बढ़ रही है पर इनका ज्यादातर ध्येय होता है बोलचाल भर की भाषा सीख लेने का। शोध के कार्य मे ज्यादा भारतीय मूल के छात्र नहीं जाना चाहते। उनकी दिशायें कम्पयूटर, इंजिनियरिंग, मेडिकल या अर्थशास्त्र पढ़ने की होती हैं। शोध की दिशा मे इक्के दुक्के अमरीकी मूल के ही छात्र जाते हैं। जब तक भारतीय छात्र इस दिशा में नहीं कदम रखेंगे, शोधकर्ताओं की गिनती गिनी चुनी ही रहेगी। और इस क्षेत्र में काम भी नाम मात्र का। जब तक भारतीय स्वयं इस दिशा में आगे नहीं बढ़ते, हिंदी सिर्फ बोलचाल की भाषा बन कर ही जीवित रहेगी। कयोंकि फिल्में समझने या नानी दादी से बात करने के लिये उतनी ही भाषा काफी होती है। जो भारत सम्बंधी शोध अमरीका में होता है उसका ज्यादा जोर समाज विज्ञान, मानव विज्ञान , राजनीति या इतिहास आदि पर है। जिसके लिये हिंदी एक सहायक भाषा के रूप में शोध के छात्र सीखते हैं पर उनका सीखना भी ग्रंथ पढ़ने भर का होता है। हिंदी साहित्य पर काम करना ध्येय नहीं होता। हिंदी को जब तक भारत में ही प्रमुखता नहीं मिलेगी, हम जितना भी सर मार लें वह बोलचाल की, आम ज़रूरतों की भाषा से आगे नहीं बढ़ेगी। उसे गंभीर विचार और चिंतन की भाषा नहीं माना जायेगा। यह बात हम आम सुनते हैं कि हिंदी में

तो इतने शब्द ही नहीं। इसलिये विचार और चिंतन के लिये अंग्रेजी को ही चुना जाता है। ज्यादा से ज्यादा हिंदी भाषा भाषी भी उच्च स्तर की हिंदी को खो रहे हैं क्योंकि विचार चिंतनके लिये वे अंग्रजी का ही इस्तेमाल करना पसंद करते हैं। भारत मे हिंदी को ज्यादा से ज्यादा हल्का बनाने ओर उसमें अंग्रेजी घुसाने का ढर्रा बन गया है। यहां के लोग जब शुद्ध हिंदी बोलते हैं तो उनका मजाक बनाया जाता है। जब तक भारत में ही हिन्दी को उठाया नहीं जायेगा और वह बुद्धिजीवियों की आम भाषा नहीं बनेगी उसका विस्तार एक माध्यमिक स्तर से उपर नहीं होगा और अमरीका में उसका अध्ययन अध्यापन भी वहीं तक सीमित रहेगा।

NOTES

१.. ACTFL has received greetings from the White House supporting February 2007 as Discover Languages month. The message recognizes the importance of effective communication to help build a world that lives in liberty, trades in freedom, and grows in prosperity. Click here (http://www.magnetmail.net/images/clients/ACTFL/attach/WhiteHouse.doc)to view and excerpt of the message.

२. From a college professor: "We plan on hosting a series of events in our Multimedia Language Learning Center to promote the learning of languages on our campus during the month of February. Our main event will be held on February 14th and will be called 'In Love with Languages'."

From a K-12 supervisor: "We are making a banner for our Literacy Showcase to celebrate our 50th anniversary of our Foreign Language programs."

From a middle school teacher: "Initially I want to put it on the top of all my classroom tests/quizzes, as well as on memos to other teachers in our middle school to promote awareness of what we do in our classes."

From a media specialist: "I am going to use it on our school's library page (mansfieldisd.org/library) to promote Discover Languages Month in Feb."

From a high school teacher: "I would like to use the logo on an announcement to parents about our World Languages fair for incoming jr-hi students."

No matter how you are celebrating, take some time to post your activities on the Discover Languages bulletin board (http://www.discoverlanguages.org/custom/DL_Board/view_3.cfm?viewall=all) so everyone can see your great ideas.

३. www.columbia.edu/~fp7

४. "Language acquisition is very similar to the process children use in acquiring first and second languages. It requires meaningful interaction in the target language--natural communication--in which speakers are not concerned with the form of their utterances but with the messages they are conveying and understanding."(Krashen, 1978"The monitor model for Second Language Acquisition", ed. by Rosario C. Gingras)

५. http://www.uni.edu/becker/hindi.html

६. www.carla.umn.edu

लेखिका
सुषम बेदी
४०४ वेस्ट ११६ स्ट्रीट न. ३३
न्यूयार्क, न्यूयार्क १००२७